चढ़ाओ नशा... | वाह रे मैं...

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम ड्रामा के गुप्त राज़ को जानते हो कि यह संगमयुग ही चढ़ती कला का युग है, सतयुग से लेकर कलायें कम होती जाती हैं"

अभी नहीं तो कभी नहीं

प्रश्न:- सबसे उत्तम सेवा कौन सी है और वह सेवा कौन करता है?

उत्तर:- (1) भारत को स्वर्ग बनाना, (2) रंक को राव बनाना, (3) पतित को पावन बनाना - यह है सबसे उत्तम सेवा। ऐसी सेवा एक बाप के सिवाए और कोई भी नहीं कर सकता। बाप ने ऐसी महान सेवा की है तब तो बच्चे उनकी इज्जत करते हैं, सबसे पहले सोमनाथ का मन्दिर बनाकर उनकी पूजा करते हैं।

Exclusive Authority of Shiv baba

गीत:-आखिर वह दिन आया आज.... Click

आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरे घर आशा आई
आज हुई मेरी सुनवाई
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आज मेरा हाथ आ कर पकड़ा
आप ग़रीब नवाज़
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

m.m.m. Imp.

☆ जिनके मन में नेक इरादे ☆
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
जिनके मन में नेक इरादे
उनकी मुश्किल दूर हटा दे हाँ
तेरे घर में क्या मुश्किल है
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
तेरे घर में क्या मुश्किल है
सुन ओ राजाधिराज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

"इक हीर थी और था एक राँझा"
कहते हैं मेरे गाँव में
सच्चा हो दिल तो, १०० मुश्क़िलें हों
झुकता नसीबा पाँव में

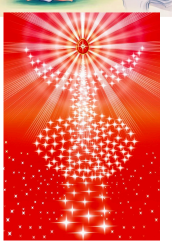

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। जैसे आत्मा गुप्त है और शरीर प्रत्यक्ष है, आत्मा इन आंखों से देखने में नहीं आती है, इनकागनीटो है। है जरूर परन्तु इस शरीर से ढकी हुई है, इसलिए कहा जाता है आत्मा गुप्त है। आत्मा खुद कहती है मैं निराकार हूँ, यहाँ साकार में आकर गुप्त बनी हूँ। आत्माओं की निराकारी दुनिया है। वहाँ तो गुप्त की बात नहीं। परमपिता परमात्मा भी वहाँ रहते हैं, उनको कहा जाता है - सुप्रीम। ऊंच ते ऊंच आत्मा। परे ते परे रहने वाला है परमपिता परमात्मा।

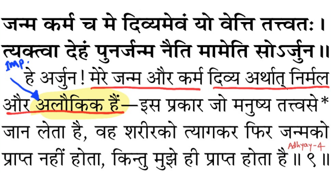
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
Imp.
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥ Adhyay-4

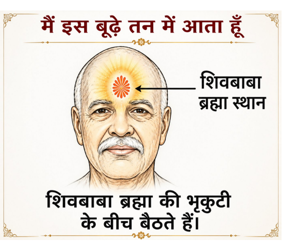

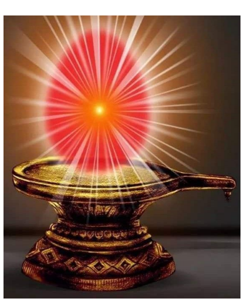

बाप कहते हैं - जैसे तुम गुप्त हो, मुझे भी गुप्त आना पड़े। मैं गर्भजेल में नहीं आता हूँ। मेरा नाम एक ही शिव चला आता है। मैं इसमें आता हूँ तो मेरा नाम नहीं बदलता। इनकी आत्मा का जो शरीर है, उनका नाम बदलता है। मुझे तो शिव ही कहते हैं, सभी आत्माओं का बाप। तो तुम आत्मायें इस शरीर में गुप्त हो। इस शरीर द्वारा कर्म करती हो। मैं भी गुप्त हूँ। तुम बच्चों को यह ज्ञान अब मिल रहा है कि मैं आत्मा इस शरीर से ढकी हुई हूँ। आत्मा है - इनकागनीटो। शरीर है कागनीटो। मैं भी अशरीरी हूँ। बाप इनकागनीटो इस शरीर द्वारा सुनाते हैं। तुम भी

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

इनकागनीटो हो, शरीर द्वारा सुनते हो। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। बाप आते हैं भारत को फिर से गरीब से साहूकार बनाने। तुम कहेंगे हमारा भारत गरीब है। सब जानते हैं परन्तु उनको कोई पता ही नहीं कि हमारा भारत साहूकार कब था, कैसे था।

तुम बच्चों को बहुत नशा है - हमारा भारत तो बहुत साहूकार था। दु:ख की बात नहीं थी। सतयुग में दूसरा कोई धर्म नहीं था। एक ही देवी-देवता धर्म था, यह किसको पता नहीं। यह जो वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है, यह कोई नहीं जानते हैं।

अभी तुम अच्छी रीति समझते हो हमारा भारत बहुत साहूकार था। अभी बहुत गरीब है। अब फिर बाप आये हैं साहूकार बनाने। भारत सतयुग में बहुत साहूकार था, जबकि देवी-देवताओं का राज्य था फिर राज्य कहाँ चला गया। यह कोई नहीं जानते हैं।

ऋषि-मुनि आदि भी कहते हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं - सतयुग में इन देवी-देवताओं को रचता-रचना का ज्ञान नहीं था। आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते। अगर उन्हों को यह ज्ञान हो कि हम सीढ़ी उतरते रसातल में जायेंगे तो बादशाही का सुख भी न रहे। चिंता लग जाए।

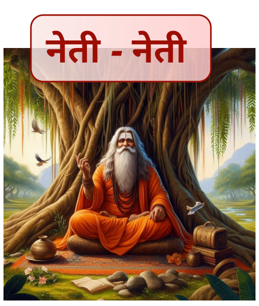

M.M.M.....imp. Point to be Noted

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Positive Worry

अभी तुमको चिंता लगी हुई है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें। "हम आत्मायें जो निराकारी दुनिया में रहती थी वहाँ से फिर कैसे सुखधाम में आई" - यह भी ज्ञान है। हम अभी चढ़ती कला में हैं। यह 84 जन्मों की सीढ़ी है, इसके बीच में क्या होता है, यह भी तुम जानते हो। सतयुग में सब तो नहीं आयेंगे। ड्रामा अनुसार हर एक एक्टर नम्बरवार अपने-अपने समय पर आकर पार्ट बजायेंगे।

वाह रे मैं...

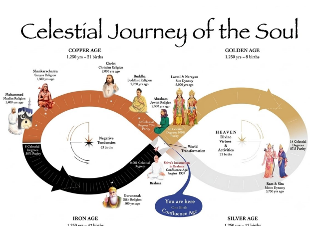

चढ़ाओ नशा...

अभी तुम बच्चे जानते हो गरीब निवाज़ किसको कहा जाता है, दुनिया नहीं जानती। गीत में भी सुना - आखिर वह दिन आया आज... यह सब है भक्ति। भगवान कब आकर हम भक्तों को इस भक्ति मार्ग से छुड़ाए सद्गति में ले जाते हैं, यह भी समझा है। रामराज्य, रावणराज्य किस चीज़ का नाम है, यह भी कोई मनुष्य नहीं जानते। अभी तुम बच्चे समझते हो

आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

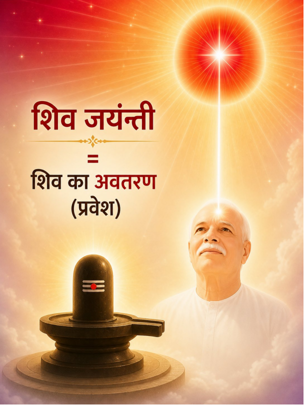

- बाबा फिर से आ गया है इस शरीर में। शिव जयन्ती भी मनाते हैं तो शिव जरूर आते हैं। ऐसे भी नहीं कहते मैं श्रीकृष्ण के तन में आता हूँ, नहीं। बाप कहते हैं - श्रीकृष्ण की आत्मा ने 84 जन्म लिए हैं। जो पहले नम्बर में था वह अब अन्त में है, ततत्वम्। मैं तो आता ही हूँ साधारण तन में। तुमको आकर बतलाता हूँ, तुम कैसे 84 जन्म भोगते हो। इस समय देवता धर्म का तो एक भी अपने को समझते नहीं हैं क्योंकि सतयुग को बहुत दूर ले गये हैं। कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है। वास्तव में ड्रामा की हिस्ट्री तो बहुत छोटी है। इसमें कोई धर्म की 500 वर्ष की, कोई की 2500 वर्ष की हिस्ट्री है। तुम्हारी हिस्ट्री है - 5 हजार वर्ष की। देवता धर्म वाले ही स्वर्ग में आयेंगे और धर्म तो आते ही बाद में हैं। देवता धर्म वाले ही और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। ड्रामा अनुसार फिर भी ऐसे ही कनवर्ट हो जायेंगे। फिर अपने-अपने धर्म में लौटकर आयेंगे।

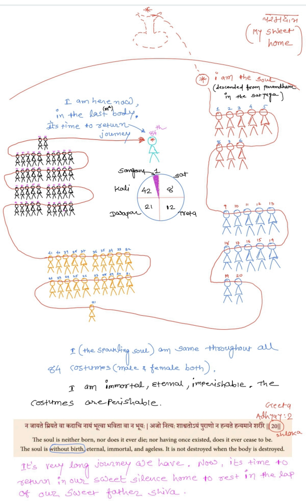

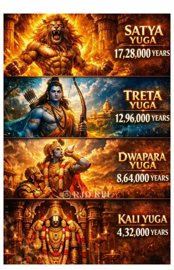

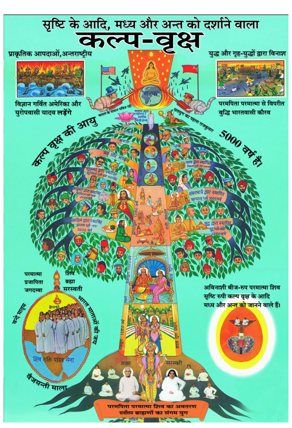

बाप समझाते हैं बच्चे, तुम तो विश्व के मालिक थे।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

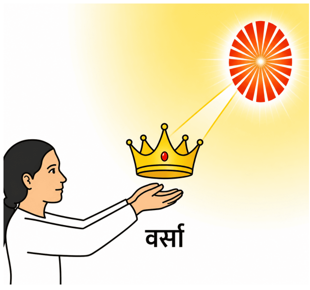

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

मधुबन

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥
अच्छी प्रकार आचरणमें लाये हुए दूसरेके धर्मसे गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्ममें तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरेका धर्म भयको देनेवाला है॥ ३५ ॥ अध्याय-3

तुम अभी समझते हो "बाबा स्वर्ग की स्थापना करने वाला है तो हम क्यों नहीं स्वर्ग में होंगे। बाप से हम वर्सा जरूर लेंगे।" तो इससे सिद्ध होता है कि यह हमारे धर्म का है, जो नहीं होगा वह आयेंगे ही नहीं। कहेंगे पराये धर्म में क्यों जायें। तुम बच्चे जानते हो सतयुग नई दुनिया में देवताओं को बहुत सुख थे। सोने के महल थे। सोमनाथ के मन्दिर में कितना सोना था। ऐसा कोई दूसरा मन्दिर होता ही नहीं। उसमें बहुत हीरे जवाहरात थे। बौद्ध आदि के कोई हीरे जवाहरों के महल नहीं होंगे। तुम बच्चों को जिस बाप ने इतना ऊंचा बनाया है उनकी तुमने कितनी इज्जत रखी है। जो अच्छा कर्म करके जाते हैं उनकी इज्जत रखी जाती है। अभी तुम जानते हो सबसे अच्छे कर्म पतित-पावन बाप ही करके जाते हैं। तुम्हारी आत्मा कहती है सबसे उत्तम से उत्तम सेवा बेहद का बाप आकर करते हैं। हमको रंक से राव, बेगर से प्रिन्स बना देते हैं। जो भारत को स्वर्ग बनाते हैं उनकी भी इज्जत कोई नहीं रखते। तुम जानते हो ऊंच ते ऊंच मन्दिर गाया हुआ है सोमनाथ का, जिसको लूट ले गये। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर को कभी कोई ने लूटा नहीं है। सोमनाथ के मन्दिर को

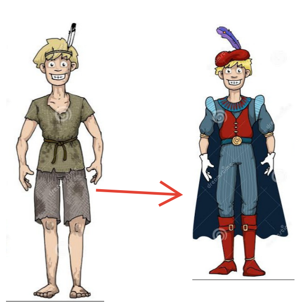

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

लूटा है। भक्ति मार्ग में यह बहुत धनवान होते हैं। राजाओं में भी नम्बरवार होते हैं ना। जो ऊंच मर्तबे वाले होते हैं उनकी छोटे मर्तबे वाले इज्जत करते हैं। दरबार में भी नम्बरवार बैठते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना।

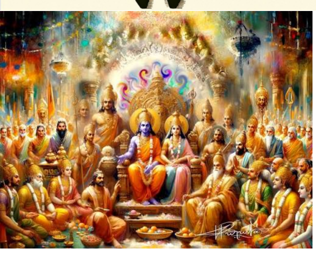

यहाँ की दरबार है, पतित राजाओं की। पावन राजाओं की दरबार कैसी होगी। जबकि उन्हों के पास इतना धन होगा तो उन्हों का घर भी इतना ही अच्छा होगा।

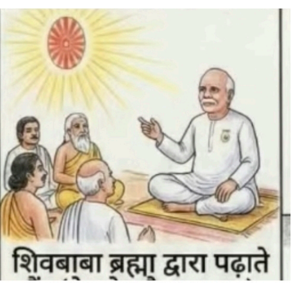

अभी तुम जानते हो बाबा हमको पढ़ा रहे हैं, स्वर्ग की स्थापना करा रहे हैं। हम महाराजा-महारानी स्वर्ग के बनते हैं फिर हम गिरते हैं, फिर हम पहले-पहले शिवबाबा के पुजारी बनेंगे।

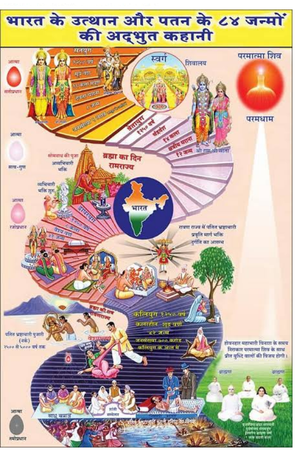

जिसने स्वर्ग का मालिक बनाया, उनकी हम पूजा करेंगे। वह हमको बहुत साहूकार बनाते हैं। अभी भारत कितना गरीब है। आगे इतना गरीब नहीं था। बहुत खुशी में रहते थे। जो जमीन 500 रूपये में ली थी, वह आज 5 हजार में भी नहीं मिलती है। वहाँ तो धरनी का मूल्य होता नहीं, जिसको जितना चाहिए ले लेवे। ढेर की ढेर जमीन पड़ी होगी।

मीठी नदियों पर तुम्हारे महल होंगे ना। मनुष्य बहुत थोड़े होंगे, प्रकृति दासी होगी, फल फूल बहुत अच्छे मिलते रहते हैं।

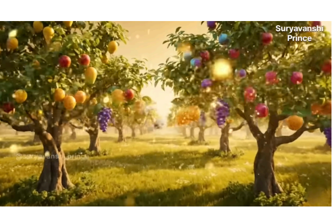

अभी तुम कितनी मेहनत करते हो। लेकिन सूखा पड़

आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज आखिर
जिस दिन का रस्ता ताकता था
जिसका था मोहताज
आखिर वो दिन आया आज
आखिर वो दिन आया आज

जाता है तो अन्न नहीं मिलता है। तो गीत सुनने से तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। बाप को गरीब-निवाज़ कहते हो। अब अर्थ समझा ना। किसको साहूकार बनाते हैं? जरूर यहाँ जो आयेंगे उनको साहूकार बनायेंगे ना। तुम बच्चे जानते हो हमको पावन से पतित बनने में 5 हजार वर्ष लगे हैं। अभी फिर फट से बाबा पतित से पावन बनाते हैं। ऊंच ते ऊंच बनाते हैं। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल जाती है। कहते हैं बाबा हम आपके हैं। बाप कहते हैं - बच्चे तुम विश्व के मालिक हो। बच्चा पैदा हुआ और वारिस बना। कितनी खुशी होती है। लेकिन बच्ची को देख चेहरा ही उतर जाता है। यहाँ तो सभी आत्मायें बच्चे हैं। हम स्वर्ग के मालिक बन गये, अभी पता पड़ा है कि हम 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग के मालिक थे। बाबा ने ऐसा बनाया था। शिव जयन्ती भी मनाते हैं - परन्तु यह नहीं जानते कि वह कब आया था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य कब था, कुछ नहीं जानते। वास्तव में भारत की आबादी सबसे बड़ी होनी चाहिए। भारत की जमीन भी सबसे बड़ी होनी चाहिए। लाखों वर्ष हो फिर तो बहुत जमीन चाहिए। सारी दुनिया की भी जमीन पूरी न

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

But we know, How Lucky & Great we are..!

Simple Math..

हो। लाखों वर्ष में कितने मनुष्य पैदा हो जाते। अनगिनत मनुष्य हो जाएं। इतने तो हैं नहीं। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। मनुष्य सुनते हैं तो कहते हैं यह बातें तो कब नहीं सुनी, न कोई शास्त्रों से पढ़ी, यह तो वन्डरफुल बातें हैं।

यह परम ज्ञान अब तक
ना पढ़ा ना लिखा गया है किताबों में
भगवान पढ़ायेंगे सम्मुख
सोचा ना देखा ख्वाबों में
प्रभु मिलन का यह प्यारा अनुभव
शब्दों में कहा नहीं जाता है
भगवान तुम्हारा ज्ञान सिमर कर

अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारे चक्र की नॉलेज है। यह बहुत जन्मों के अन्त में अब पतित आत्मा है, जो सतोप्रधान था सो अब तमोप्रधान है, फिर सतोप्रधान बनना है। तुम आत्माओं को अब शिक्षा मिल रही है - आत्मा शरीर द्वारा सुनती है तो शरीर झूलता है क्योंकि आत्मा सुनती है ना। बरोबर हम आत्मा ने 84 जन्म लिए हैं, 84 माँ बाप जरूर मिले होंगे। यह भी हिसाब है ना। बुद्धि में आता है 84 जन्म लेते हैं फिर और कमती जन्म वाले भी होंगे। मिनीमम, मैक्सीमम का हिसाब होगा ना। बाप बैठ समझाते हैं शास्त्रों में क्या-क्या लिख दिया है। तुम्हारे लिए तो फिर भी 84 जन्म कहते हैं, मेरे लिए तो अनगिनत, बेशुमार जन्म कह दिया है। कण-कण में बस जिधर

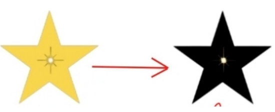

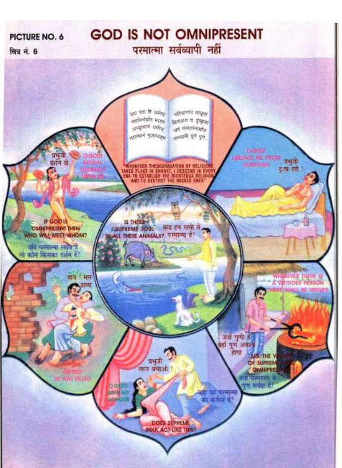

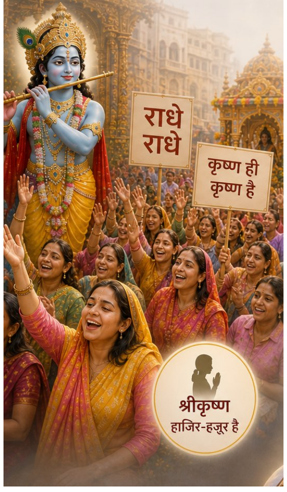

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

देखता हूँ, तू ही तू.... कृष्ण ही कृष्ण है। मथुरा वृन्दावन में कहते हैं - श्रीकृष्ण सर्वव्यापी है। राधे पंथ वाले फिर कहेंगे राधे ही राधे। कहेंगे हम राधा-स्वामी हैं। कृष्ण स्वामी और हैं। वह राधे को मानते हैं, जिधर देखता हूँ राधे ही राधे। तुम भी राधे हम भी राधे।

Words of world Almighty Authority

अब बाप बैठ समझाते हैं बरोबर मैं गरीब निवाज़ हूँ ना। भारत ही सबसे साहूकार था। अभी सबसे गरीब बना है इसलिए मुझे भारत में ही आना पड़े। यह बना बनाया ड्रामा है, इसमें जरा भी फ़र्क नहीं हो सकता है। यह ह्यूज़ ड्रामा है। ड्रामा जो शूट हुआ वह हूबहू रिपीट होगा। ड्रामा का भी पता होना चाहिए। ड्रामा माना ड्रामा। वह होता है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। इसके आदि-मध्य-अन्त को कोई नहीं जानते। तो गरीब निवाज़ निराकार भगवान को ही मानेंगे, श्रीकृष्ण को नहीं मानेंगे। श्रीकृष्ण तो धनवान सतयुग का प्रिन्स बनता है। भगवान को तो अपना शरीर है नहीं, वह आकर तुम बच्चों को

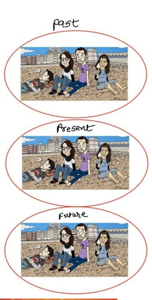

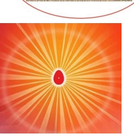

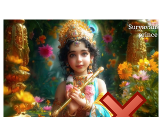

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया॥
मैं अजन्मा और अविनाशीस्वरूप होते हुए भी तथा समस्त प्राणियोंका ईश्वर होते हुए भी अपनी प्रकृतिको अधीन करके अपनी योगमायासे प्रकट होता हूँ॥ ६॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
हे भारत! जब-जब धर्मकी हानि और अधर्मकी वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूपको रचता हूँ अर्थात् साकाररूपसे लोगोंके सम्मुख प्रकट होता हूँ॥ ७॥

* अध्याय ४ * ६३

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥
साधु पुरुषोंका उद्धार करनेके लिये, पापकर्म करनेवालोंका विनाश करनेके लिये और धर्मकी अच्छी तरहसे स्थापना करनेके लिये मैं युग-युगमें प्रकट हुआ करता हूँ॥ ८॥
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

ज्ञान य

सेवा M.imp.

धनवान बनाते हैं। तुमको राजयोग की शिक्षा देते हैं। वह भी पढ़ाई से बैरिस्टर आदि बनते हैं फिर कमाई करते हैं। बाप भी तुमको अभी पढ़ाते हैं। तुम भविष्य में नर से नारायण बनते हो। तुम्हारा जन्म तो होगा ना। ऐसे तो नहीं स्वर्ग कोई समुद्र से निकल आयेगा। श्रीकृष्ण ने भी जन्म लिया ना। कंसपुरी आदि तो उस समय थी नहीं। श्रीकृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का नाम ही नहीं, उनका बाप कहाँ है। जरूर राजा का बच्चा होगा ना। वहाँ बड़े राजा के घर में जन्म होता है। परन्तु वह पतित राजा होने के कारण उनका नाम थोड़ेही होगा। श्रीकृष्ण जब है तब थोड़े पतित भी रहते हैं। जब वह बिल्कुल खलास हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठते हैं, अपना राज्य ले लेते हैं तब ही उनका संवत शुरू होता है। लक्ष्मी-नारायण से संवत शुरू होता है। तुम पूरा हिसाब लिखते हो। इनका राज्य इतना समय फिर इनका इतना समय तो मनुष्य समझेंगे यह तो कल्प की आयु बड़ी हो ही नहीं सकती। 5 हजार वर्ष का पूरा हिसाब है। अच्छा!

अभी नहीं तो कभी नहीं

v/s

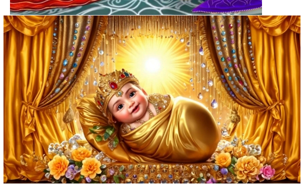

Refer last Four Pages for सतयुग & श्री कृष्ण Related मुरली Points

(जन्म के समय श्री कृष्ण के सिवाय जो भी होंगे वो अभी पतित होंगे - perfect पवित्र जन्म श्री कृष्ण का ही होगा) उनके बाद धीरे-धीरे परमधाम से आत्मायें आकर पावन शरीर धारण करेंगी...

Just Churning

सतयुग की शुरुआत श्री कृष्ण के जन्म से...

संवत की शुरुआत लक्ष्मी-नारायण की गद्दी से.. (इस सृष्टि पर एक भी पतित नहीं)

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) रचयिता और रचना का ज्ञान बुद्धि में रख सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करना है। बस एक ही चिंता रखनी है कि "हमें सतोप्रधान जरूर बनना है"।
At Any cost

कापारी खुशी

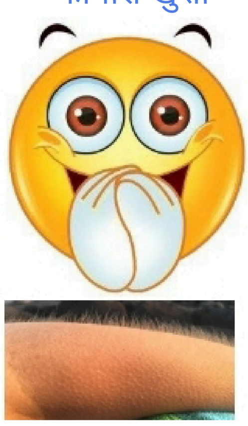

2) इस बेहद के ड्रामा को बुद्धि में रख अपार खुशी में रहना है, बाप समान इज्जत पाने के लिए पतितों को पावन बनाने की सेवा करनी है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Method/Process/Instrument

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- अधिकारीपन की स्मृति द्वारा सर्व शक्तियों का अनुभव करने वाले प्राप्ति स्वरूप भव

Outcome/Output/Result Finale Achievement

यदि बुद्धि का संबंध सदा एक बाप से लगा हुआ रहे तो सर्व शक्तियों का वर्सा अधिकार के रूप में प्राप्त होता है।

जो अधिकारी समझकर हर कर्म करते हैं उन्हें कहने वा संकल्प में भी मांगने की आवश्यकता नहीं रहती।

यह अधिकारी पन की स्मृति ही सर्व शक्तियों के प्राप्ति का अनुभव कराती है।

तो नशा रहे कि सर्व शक्तियां हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार हैं। अधिकारी बन करके चलो तो अधीनता समाप्त हो जायेगी।

If

स्लोगन:- स्वयं के साथ-साथ प्रकृति को भी पावन बनाना है तो सम्पूर्ण लगाव मुक्त बनो।

Then

No Attachment Even in a Thought

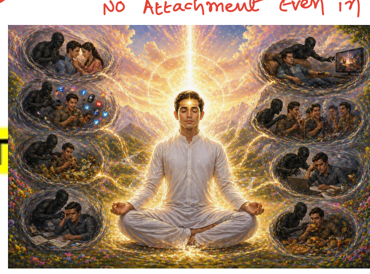

Points: ज्ञा णा सेवा M.imp.

28-08-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर

सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

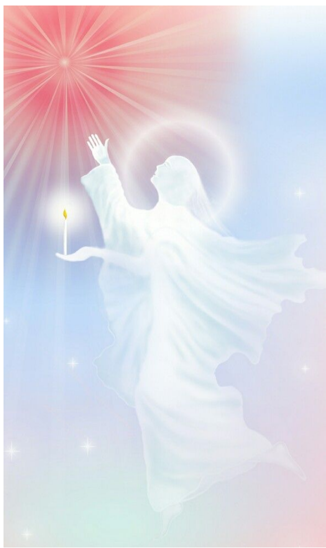

अगर पवित्रता का नियम पक्का है तो लगाव मुक्त, ईर्ष्या और क्रोध से भी मुक्त बनो।

चिड़चिड़ापन भी न हो। यह भी लगाव नहीं रखो कि यह होना ही चाहिए।

very subtle point for self checking

समझा?

स्वार्थ या ईर्ष्या के वश कोई बात कहेंगे और वह पूरी नहीं होगी तो क्रोध पैदा होगा इसलिए पवित्रता के पिल्लर को पक्का करो तो यह पिल्लर लाइट हाउस का काम करेगा।

very Subtle Psychology

Point M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26 → Click

All अव्यक्त इशारे July 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

11.8 रूहानी खुशबू फैलाओ :

रोज़ अमृतवेले विश्व-वरदानी स्वरूप से विश्व-कल्याणकारी बाप के साथ कम्बाइण्ड रूप बन विश्व-वरदानी शक्ति और विश्व-कल्याणकारी शिव, शिव और शक्ति कम्बाइण्ड रूप से मनसा संकल्प वा वृत्ति द्वारा वायब्रेशन की खुशबू

ela.p65 93

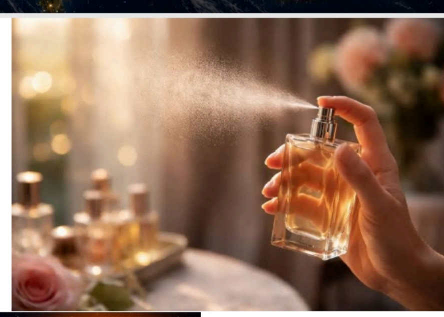

फैलाना। जैसे आजकल की स्थूल खुशबू के साधनों से भिन्न-भिन्न प्रकार की खुशबू फैलाते हैं, कोई गुलाब की खुशबू, कोई चन्दन की खुशबू। ऐसे आप द्वारा सुख, शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनन्द की भिन्न-भिन्न खुशबू फैलती जाये। रोज़ अमृतवेले भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ वायब्रेशन्स के फाउन्टेन के मुआफिक ग्लोब के ऊपर गुलाबबाशी डालना। सिर्फ संकल्प का आटोमेटिक स्विच ऑन करना। यह तो आता है ना ? क्योंकि आज के विश्व में अशुद्ध वृत्ति की बदबू बहुत है। उसको खुशबूदार बनाओ।

11/11/2023

बाप समझाते हैं यह ड्रामा बना हुआ है। जैसा साहूकार मनुष्य वैसा फरनीचर होगा। गरीब के पास ठिक्कर-ठोबर होगा, साहूकार के पास तो इतने वैभव होंगे। तुम सतयुग में साहूकार बनते हो तो तुम्हारे हीरे-जवाहरों के महल होते हैं। वहाँ पर कोई गन्दगी आदि नहीं होती, बांस नहीं होती। यहाँ तो बांस होती है इसलिए अगरबत्ती आदि जगाई जाती है। वहाँ तो फूलों आदि में नैचुरल खुशबू रहती है। अगरबत्ती जलाने की दरकार नहीं पड़ती, उनको हेविन कहा जाता है। बाप हेविन का मालिक

04-07-2023 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

परमात्मा तो अशरीरी है, उनको बुद्धि से ही याद कर सकते हैं। देह-अभिमान तोड़ देही-अभिमानी बन जायेंगे। बुद्धि में चक्र तो फिरता रहता है। हम अपने स्वर्गधाम जरूर पधारेंगे। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य, शूद्र वंशी बनेंगे। फिर बाबा आकर शूद्र से ब्राह्मण बनायेंगे। ऐसे-ऐसे अपने से बात करनी है। बच्चे लोग बगीचों में जाकर पढ़ते हैं। तुम भी एकान्त में बैठ शिवबाबा को याद करो। हमारा पुराना हिसाब-किताब चुक्तू होगा फिर हम राज्य करेंगे। अभी हम युद्ध के मैदान में है। फिर हम भारत पर अटल-अखण्ड सुख-शान्ति का राज्य करेंगे। वी आर एट वार........ हम सब लड़ाई के मैदान पर हैं। यह है सारी योगबल की बात। इनमें तकलीफ तो कोई नहीं। सिर्फ बाबा की श्रीमत पर चलना है। फिर आटोमेटिकली राजाई का तिलक लग जायेगा। वरदान मिल जाता है - आयुश्वान भव, पुत्रवान भव। वहाँ धन आदि सब अकीचार रहता है। पहले से साक्षात्कार होता है कि बच्चा आने वाला है। वहाँ मुख का प्यार होता है। विकार की बात ही नहीं है। वह है ही निर्विकारी दुनिया। श्रीकृष्ण देखो - कितना फर्स्टक्लास मीठा है! अब ऐसा बनना है। तुमको तो पटरानी बनना है, मीरा तो सिर्फ भजन गाती थी उनको भगवान् थोड़ेही मिला, वह तो है ही भक्ति मार्ग। मीरा भी अभी कहाँ न कहाँ है। उसने भी ज्ञान लिया होगा, अगर पक्की भक्तिन होगी। हम भी द्वापर से भक्ति करते आये हैं ना। बुद्धि से समझना है - शिवबाबा मैं आपकी हूँ। आप से पूरा वर्सा लूंगी। मैं आप पर बलिहार जाती हूँ। तो बाबा भी 21 बार बलिहार जायेंगे। अगर बलिहार नहीं जायेंगे, सौतेले बनेंगे तो 21 बार प्रजा में आयेंगे। बाबा कहते हैं - तुम मेरे को याद करो तो हम मदद भी करेंगे। मदद तो जरूर अपने बच्चों को ही करेंगे, दूसरे को क्यों करेंगे! अच्छा!

Point to be Noted

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue= धारणा, Green = सेवा

नारायण की कथा सुनने, जिससे नर से नारायण बनेंगे। नारायण बनेंगे तो जरूर लक्ष्मी भी होगी। लक्ष्मी-नारायण होंगे तो जरूर उन्हों की राजधानी भी होगी ना। अकेले लक्ष्मी-नारायण तो नहीं बनेंगे। लक्ष्मी बनने की अलग कथा थोड़ेही है। नारायण के साथ लक्ष्मी भी बनती है। लक्ष्मी भी कभी नारायण बनती है। नारायण फिर कभी

Secret Revealed

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 6

19-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

लक्ष्मी बनते हैं। कोई-कोई गीत बहुत अच्छे हैं। माया के घुटके आने पर गीत सुनने से हर्षितपना आ जायेगा। जैसे तैरना सीखना होता है तो पहले

बिल्कुल अच्छा धारणा वाला होगा वह अच्छा रीत समझा सकेंगे। ब्रह्मा पर ही जास्ती बात समझाने की होती है। विष्णु को भी नहीं जानते। यह भी समझाना होता है। वैकुण्ठ को विष्णुपुरी कहा जाता है अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। श्रीकृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेंगे ना - हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फ़र्क हो जाता है। श्रीकृष्ण के बाप राजा का नाम ही नहीं है। श्रीकृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊंच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं श्रीकृष्ण को जन्म देने। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है। नहीं। श्रीकृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। है

Secret Revealed

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 6

13-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Note it Down

जरूर ब्राह्मण। परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है। श्रीकृष्ण की आत्मा की पढ़ाई अपने बाप से ऊंच थी, तब तो इतना नाम होता है। श्रीकृष्ण का बाप कौन था - यह जैसे किसको पता नहीं। आगे चल मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है। राधे के भी माँ-बाप तो होंगे ना। परन्तु उनसे राधे का नाम जास्ती है क्योंकि माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। राधे का नाम उनसे ऊंच हो जाता है। यह हैं डीटेल की बातें - बच्चों को समझाने के लिए। सारा मदार पढ़ाई पर है। ब्रह्मा पर भी समझाने का अक्ल चाहिए। वही श्रीकृष्ण जो है उनकी आत्मा ही 84 जन्म भोगती है। तुम भी 84 जन्म लेते हो। सब इकट्ठे तो नहीं आयेंगे। जो पढ़ाई में पहले-पहले होते हैं वहाँ

keep noting all these secrets 24/02/26

Point to be Noted

किसको पता नहीं है। श्रीकृष्ण और राधे की आयु में 2-3 वर्ष का फ़र्क होगा। सतयुग में जरूर पहले श्रीकृष्ण ने जन्म लिया होगा फिर राधे ने। परन्तु सतयुग कब था, यह किसको पता नहीं है। तुमको भी समझने में बहुत वर्ष लगे हैं, तो दो दिन में कोई कहाँ तक समझेंगे। बाप तो बहुत सहज बताते हैं,

06/02/2026

Attention! Top secret Revealed

point to be noted

भी तुमको अभी पढ़ाते हैं। तुम भविष्य में नर से नारायण बनते हो। तुम्हारा जन्म तो होगा ना। ऐसे तो नहीं स्वर्ग कोई समुद्र से निकल आयेगा। श्रीकृष्ण ने भी जन्म लिया ना। कंसपुरी आदि तो उस समय थी नहीं। श्रीकृष्ण का कितना नाम गाया जाता है। उनके बाप का गायन ही नहीं। उनका बाप कहाँ है? जरूर श्रीकृष्ण किसी का बच्चा होगा ना। श्रीकृष्ण जब जन्म लेते हैं तब थोड़े बहुत पतित भी रहते हैं। जब वह बिल्कुल खत्म हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठते हैं। अपना राज्य ले लेते हैं, तब से ही उनका संवत शुरू होता है। लक्ष्मी-नारायण से ही संवत शुरू होता है। तुम पूरा हिसाब लिखते हो। इनका राज्य इतना समय,

09-07-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

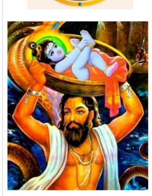

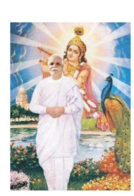

अलग हुए हो फिर तुम ही आकर पहले मिलते हो। सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स है श्रीकृष्ण। श्रीकृष्ण का बाप भी तो होगा ना। श्रीकृष्ण के माँ बाप का इतना कुछ दिखाते नहीं हैं। सिर्फ दिखाते हैं माथे पर रखकर नदी से उस पार ले गया। राजाई आदि कुछ नहीं दिखाई है। उनके बाप की महिमा क्यों नहीं है! अभी तुम जानते हो इस समय श्रीकृष्ण की आत्मा ने अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ी है। जिस कारण माँ बाप से भी ऊंच पद पाया है। तुम

संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल (फूल) बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है, छांटछूट होकर। तमोप्रधान जो भी हैं वह खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं तब श्रीकृष्ण का जन्म होता है, तब तक बदली सदली होती रहती है। जब कोई छी-छी नहीं रहेगा तब श्रीकृष्ण आयेगा, तब तक तुम आते जाते रहेंगे। श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले माँ बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे। बाकी चले जायेंगे, तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल (पवित्र) जन्म श्रीकृष्ण का ही पहले-पहले होता है। उसके बाद नई दुनिया वैकुण्ठ कहा जाता है।

ये पक्का समझ लो..

श्रीकृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। श्रीकृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। श्रीकृष्ण के माँ-बाप का नाम इतना बाला नहीं है। श्रीकृष्ण से पहले जिनका जन्म होता है वो योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं श्रीकृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उन्हों का भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है उनके माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है जितना श्रीकृष्ण ने किया है। यह सब बातें आगे चल तुम समझते जायेंगे। पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वही सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं तब उन्हों का जन्म होता है फिर कहेंगे पावन दुनिया इसलिए श्रीकृष्ण का नाम बाला है। माँ-बाप का इतना नहीं। आगे चल तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। टाइम तो पड़ा है। तुम किसको भी समझा सकते हो - हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। विश्व में इनका राज्य अब स्थापन हो रहा है। हमारे लिए तो नई दुनिया चाहिए। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय

Mind very well..

costume of Mother - Father of krishna are made by

Coming soon...

Coming soon...

यह सांवरा था ना। कहते हैं श्रीकृष्ण को सर्प ने डसा तो सांवरा हो गया। अब वह तो सतयुग का प्रिन्स था, कैसे काला हो गया। अभी तुम यह बातें समझते हो। श्रीकृष्ण के माँ-बाप भी अभी पढ़ रहे हैं। माँ-बाप से उत्तम श्रीकृष्ण गाया हुआ है। माँ-बाप का कोई नाम नहीं है। नहीं तो जिस माँ-बाप से ऐसा बच्चा पैदा हुआ वह माँ-बाप भी प्यारे होने चाहिए। परन्तु नहीं, महिमा सारी राधे-कृष्ण की है। माँ-बाप की कुछ है नहीं। तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान है।

11/05/26

Mind well

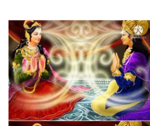

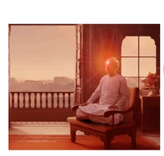

बाप को यहाँ आना पड़ता है, वापिस तो कोई भी आत्मा जा नहीं सकती। जो भी आते हैं उनको सतो रजो तमो से पास करना ही है। श्रीकृष्ण भी पूरे 84 जन्म लेते हैं और पूरे 5 हजार वर्ष पार्ट बजाया। जब आत्मा पेट में है तो भी जन्म तो है। श्रीकृष्ण की आत्मा जब सतयुग में आती है, गर्भ में प्रवेश किया तब से लेकर 5 हजार वर्ष में 84 जन्मों का पार्ट बजाना है। जैसे शिवजयन्ती मनाते हैं तो इसमें बैठा है ना। श्रीकृष्ण की आत्मा भी गर्भ में आई चुरपुर हुई, उस समय से लेकर 5 हजार वर्ष का हिसाब शुरू होता है। अगर कम जास्ती हो तो फिर 5 हजार वर्ष में कम हो जाए। यह बड़ी सूक्ष्म समझने की बातें हैं। बच्चे जानते हैं श्रीकृष्ण की आत्मा फिर से यह ज्ञान ले रही है, फिर से श्रीकृष्ण बनने के लिए। तुम भी कंसपुरी से कृष्णपुरी में जाते हो। यह बातें बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं।

Point to be Noted

Mind It...

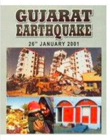

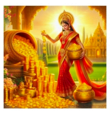

अभी तो टाइम पड़ा है ना। नई दुनिया बनने में कोई देरी थोड़ेही लगती है। कहाँ भी अर्थक्वेक आदि होती है तो 2-3 वर्ष में एकदम नये मकान आदि बना देते हैं। कारीगर बहुत हों, सामान सारा तैयार हो फिर बनने में देर थोड़ेही लगेगी। विलायत में मकान कैसे बनते हैं - मिनट मोटर। तो स्वर्ग में कितना जल्दी बनते होंगे। सोना-चांदी आदि बहुत तुमको मिल जाता है। खानियों से तुम सोना चांदी हीरे ले आते हो। हुनर तो सब सीख रहे हैं। साइंस का कितना घमण्ड चल रहा है। यह साइंस फिर वहाँ काम में आयेगी। यहाँ सीखने वाले फिर दूसरा जन्म वहाँ ले यह काम में लायेंगे। उस समय तो सारी दुनिया नई हो जाती है, रावण राज्य खत्म हो जाता है। 5 तत्व भी कायदेमुजीब सर्विस में रहते हैं। स्वर्ग बन जाता है। वहाँ कोई ऐसा उपद्रव नहीं

Heaven/सतयुग

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

होता, रावणराज्य ही नहीं, सब सतोप्रधान हैं।

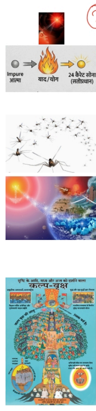

पतित से पावन बनेंगे। आत्मा में जो खाद पड़ी है वह निकले कैसे? बाप कहते हैं योग से ही तुम्हारी खाद खत्म हो जायेगी। यह पतित शरीर तो यहाँ ही छोड़ना है। आत्मा पवित्र बन जायेगी। सब मच्छरों सदृश जायेंगे। बुद्धि भी कहती है सतयुग में बहुत थोड़े रहते हैं। इस विनाश में कितने मनुष्य मरेंगे। बाकी थोड़े जाकर रहेंगे। राजायें तो थोड़े रहेंगे, बाकी 9 लाख प्रजा सतयुग में रहती है। इस पर गाते भी है ना - 9 लाख तारे, यानी प्रजा। झाड़ पहले छोटा होता है फिर वृद्धि को पाता है। अभी तो कितनी आत्मायें हैं। बाप आते हैं सबका गाइड बन ले जाते हैं। अच्छा!

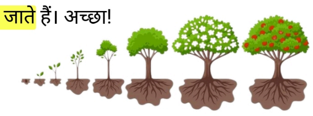

मुरली

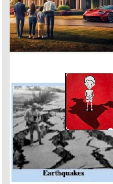

जास्ती हैं। साहूकार पिछाड़ी में आयेंगे। तो भारत जो इतना ऊंच था सो फिर इतना गरीब कैसे हुआ, तुम समझते हो। अर्थक्वेक आदि में सब महल आदि चले जायेंगे तो गरीब हो जायेगा। रावण राज्य होने से हाहाकार हो जाता है तो फिर ऐसी चीज़ें रह न सकें। हर चीज़ की आयु तो होती है ना। वहाँ जैसे मनुष्यों की आयु बड़ी होती है वैसे मकान की भी आयु बड़ी होती है। सोने के, मार्बल के बड़े-बड़े मकान बनते जायेंगे। सोने के तो और ही मजबूत होंगे। नाटक में भी दिखाते हैं ना - लड़ाई होती है, मकान टूट फूट जाते हैं। फिर बन जाते हैं। उन्हों की बनावट ऐसी होती है। यह जो स्वर्ग के महल आदि बनायेंगे, ऐसे तो नहीं दिखायेंगे मिस्त्री लोग कैसे मकान बनाते हैं। हाँ समझते हैं वही मकान होंगे। आगे चल तुमको

Heaven/सतयुग

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

साक्षात्कार होगा। ऐसा विवेक कहता है। इन बातों से बच्चों का तैलुक नहीं है। बच्चों को तो पढ़ाई पढ़नी है। स्वर्ग का मालिक बनना है। स्वर्ग और

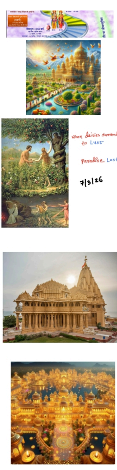

छीनते हैं, वह स्वर्ग कहाँ गया। जैसे कहा जाता है नर्क कहाँ गया? खत्म हो गया। स्वर्ग भी खत्म हो जायेगा। उस समय भी अर्थक्वेक आदि होती है। वह हीरे जवाहरात के महल आदि ऐसे चले गये जो कोई निकाल न सके। सोने हीरे जवाहरात के महल कभी नीचे से निकले नहीं हैं। सोमनाथ आदि का मन्दिर तो बाद में बना है, उनसे तो उन्हों के घर ऊंचे होंगे। लक्ष्मी-नारायण का घर कैसा होगा? वह सारी मिलकियत कहाँ गई? ऐसी-ऐसी बातें जब विद्वान सुनेंगे तो वण्डर खायेंगे, तो इन्हों की नॉलेज जबरदस्त है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते सिर्फ सर्वव्यापी कह देते हैं। यह सब समझने की और समझाने की बातें हैं।

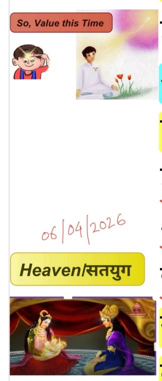

Heaven/सतयुग

कोई विकार होते नहीं। बाप ने समझाया है - देवता सिर्फ आत्म-अभिमानी हैं, परमात्म-अभिमानी नहीं हैं। तुम आत्म-अभिमानी भी हो, परमात्म-अभिमानी भी हो। पहले दोनों नहीं थे। सतयुग में परमात्मा को नहीं जानते। आत्मा को जानते हैं कि हम आत्मा यह पुराना शरीर छोड़ फिर जाए नया शरीर लेंगी। पहले मालूम पड़ जाता है, अब पुराना छोड़ नया लेना है। बच्चा होता है तो भी पहले से साक्षात्कार हो जाता है। योगबल से तुम सारे विश्व के मालिक बन जाते हो। तो क्या योगबल से बच्चे नहीं हो सकते! योगबल से कोई भी चीज़ को तुम पावन बना सकते हो। परन्तु तुम याद भूल जाते हो। कोई को अभ्यास पड़ जाता है। बहुत संन्यासी

मास्टर नॉलेजफुल, ब्लिसफुल यह सब वरदान बाप से अभी तुमको मिलते हैं। सतयुग में तो बुद्धू होंगे। इन लक्ष्मी-नारायण को तो कुछ भी नॉलेज नहीं। इन्हों को होती तो परम्परा से चली आती।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Simple Logic

चढ़ाओ नशा...

तुम जैसा परम आनन्द देवताओं को भी नहीं हो सकता है। अच्छा!

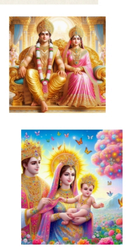

ही स्वर्ग के लायक बनेगी। वहाँ तुम्हारा शरीर भी निरोगी होगा, आयु भी बड़ी होगी। धन भी बहुत होगा। वहाँ कभी धर्म का बच्चा नहीं बनाते। बाप कहते हैं - आयुश्वान भव, सम्पत्तिवान भव। पुत्र भी एक जरूर होगा। इस समय बाप सभी को धर्म का

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बच्चा बनाते हैं। तो फिर सतयुग में कोई धर्म का बच्चा होता नहीं। एक बच्चा एक बच्ची है योगबल से। पूछते हैं वहाँ बच्चे कैसे पैदा होंगे, वहाँ है ही योगबल। ड्रामा में नूँध है। सतयुग में सब योगी हैं। श्रीकृष्ण को योगेश्वर कहा जाता है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण योग में रहते हैं। वो तो पूरा पवित्र योगी है। ईश्वर ने सबको योगेश्वर बनाया है तो भविष्य में योगी रहते हैं। बाप ने योगी बनाया है। योगियों की